ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न क्वेयं यथा त्वम्।

सामवेद 203

हे प्रभो तुझ जैसा काई नहीं है। आप अनुपम हैं।

O God ! Verily there is none like you.
You are matchless.

वर्ष 41, अंक 48 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 सितम्बर, 2018 से रविवार 23 सितम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली: 25-26-27-28 अक्टूबर, 2018

सम्मेलन स्थल – स्वर्ण जयन्ती पार्क, सैक्टर 10 रोहिणी, दिल्ली में

महर्षि दयानन्द नगर का निर्माण कार्य आरम्भ

शोभायात्रा के रूप में पहुंचे हजारों की संख्या में आर्यजन : दिल्ली में भारी उत्साह

वृक्षारोपण, ध्वजारोहण, यज्ञशाला निर्माण तथा नगर निर्माण का शुभारम्भ यज्ञ सम्पन्न

शिलान्यास स्थल पर हजारों की उपस्थिति से सम्पन्न हो गया एक लघु आर्य सम्मेलन

महासम्मेलन में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति हमारा मेहमान: करें पूरी तैयारी – महाशय धर्मपाल, स्वागताध्यक्ष

मैं धन्य हूँ कि मेरे कार्यकाल और मेरे क्षेत्र में ऐसा ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हो रहा है
– आदेश कुमार गुप्ता, महापौर, उत्तरी दिल्ली न.नि.

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन समस्त आर्यों का प्रेरणा पर्व है। अपने इस खास त्यौहार में सभी दिल्लीवासियों को सम्मिलित होने का प्रेम भरा आमन्त्रण देने के लिए, महर्षि दयानन्द नगर का निर्माण यज्ञ करने करने के लिए एवं जन-जागृति की लहर चलाने के लिए 16 सितम्बर, 2018 को दोपहर 3 बजे स्वामी दयानन्द उद्यान सुभाष पैलेस से स्वर्ण जयन्ती पार्क रोहिणी के लिए विशाल शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया। इस शोभायात्रा को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं महासम्मेलन के संयोजक श्री धर्मपाल आर्य जी ने ओ३म ध्वज लहराकर गति प्रदान की। इस अवसर पर दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी, उ.प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य, आर्य तपस्वी

– शेष पृष्ठ 5 एवं 8 पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 : 25-26-27-28 अक्टूबर, 2018

दिल खोलकर सहयोग करें

अक्टूबर-2018 में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आप में बहुत बड़ा सम्मेलन होगा। सम्पूर्ण विश्व से 2 लाख से अधिक आर्य जनों के इसमें पहुँचने की आशा है। इसे देखते हुए सम्मेलन की सभी व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं के लिए आप सबका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है। सभी आर्यजनों, आर्य समाजों, आर्य समूहों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य महिला सभाओं/ आर्य शिक्षण संस्थानों/विद्यालयों/गुरुकुलों तथा अन्य सभी संस्थाओं से निवेदन है कि अपनी सहयोग राशि चैक/बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-2018"** के नाम बनाकर भेजने की कृपा करें। यह सम्मेलन आप का है और आप के सहयोग से ही यह हर प्रकार से अद्वितीय बन सकता है। कृपया अपनी सहयोग राशि **'महासम्मेलन संयोजक'** के नाम **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन,15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001'** के पते पर भेजें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।** – *संयोजक*

वेद-स्वाध्याय

निराभिमान पुरुष

तमित्पृच्छन्ति न सिमो वि पृच्छति स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत्।
न मृष्यते प्रथमं पापरं वचोऽ स्यक्रत्वा सचते अप्रदृपित:।। *-ऋ. 1/154/2*
ऋषि: दीर्घतमा औचथ्य:।। देवता - अग्नि:।। छन्द: जगती।।

शब्दार्थ - **तं इत्** = उस अन्तरात्मा से ही **पृच्छन्ति** = सब पूछते हैं, पर **सिम:** = हर कोई **विपृच्छति न** = विशेष तौर पर (पूरी तरह) नहीं पूछता है, **धीर:** = बुद्धिमान् व धैर्यवान पुरुष भी (उतना ही पूछ सकता है) **यत्** = जितना कि वह स्वेन **इव** = अपने ही **मनसा** = मन से अग्रभीत् = ग्रहण कर सकता है। वह अग्नि **प्रथमं वच:** = अपने बोलने से न तो पहले के किसी बोल को **न अपरम्** = और न ही बाद के किसी बोल को **मृष्यते** = सहता है, **अप्रदृपित:** = निरभिमान होकर आया पुरुष ही **अस्य** = इस अग्नि के **क्रत्वा** = कर्म व प्रज्ञा से **सचते** = अपने-आपको संयुक्त करता है।

विनय- सब मनुष्य अपने अन्तरात्मा से ही पूछा करते हैं। यह और बात है कि प्रत्येक उससे पूरी तरह पूछ न सकता हो, किन्तु यह ठीक है कि सब कोई अपने मन (अन्तरात्मा) से ही सोचता है और अपनी मनमानी ही करता है। अन्तरात्मा से विशेष तौर पर (पूरी तरह) पूछ सकने वाले तो विरले ही होते हैं, सब नहीं। बात यह है कि प्रत्येक अपनी शक्ति के अनुसार पूछ सकता है। जिसका बुद्धि-मन जितना शुद्ध और विकसित होगा, वह जितना ग्रहण कर सकता होगा, उतना ही ज्ञान वह अपनी अन्तरात्मा की अग्नि से प्राप्त कर सकेगा। एक बुद्धिमान् पुरुष पूरे धैर्यपूर्वक पूछने का प्रयत्न करता हुआ भी अपने निजी मन जितना ग्रहण कर सकेगा, उतना ही अपने प्रश्नों का उत्तर अन्तरात्मा द्वारा प्राप्त करेगा।

पर एक बात सदा याद रखनी चाहिए, वह यह है कि हमें इस अग्निदेव के समीप सर्वथा निरभिमान होकर ही पहुँच करनी चाहिए। जो मनुष्य अपने बड़े भारी ज्ञानी-पण्डित होने के सब दर्प को, सब पाण्डित्य को भुलाकर, अपने-आपको खाली करके, अबोध बालक होकर पूछता है वही उस अग्नि के प्रज्ञा और कर्म से अपने को संयुक्त करता है, उससे ठीक ज्ञान और प्रेरणाओं को प्राप्त करता है। जब अग्निदेव बोलता है तो उस अपने बोलने से पहले और पीछे के किसी दूसरे के बोलने को नहीं सह सकता। उसका उत्तर सुनने के लिए हमें जहाँ अपने सब पूर्वाग्रह, प्रथम निश्चय तथा पक्षपात को बिल्कुल छोड़कर ही उसे सुनना चाहिए, वहाँ उसका उत्तर सुन लेने के बाद भी उसमें अपना बोल मिला देने से सावधान रहना चाहिए, अर्थात् उस उत्तर के किसी अंश को अपनी कल्पना द्वारा पूरा करने का यत्न न करना चाहिए और न अपने विचारों का रङ्ग उस उत्तर में आने देना चाहिए। बस, यही अपने आत्मदेव से बिल्कुल ठीक-ठीक उत्तर प्राप्त करने का रहस्य है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

धार्मिक दरबार : आशू महाराज के खोल से निकाला आसिफ खान

भारत के बड़े टीवी और समाचार चैनलों पर हर रोज धार्मिक दरबार सजता है। बड़ी संख्या में भक्तों के बीच चमत्कारी शक्तियों का दावा करने वाले बाबा सिंहासन पर विराजमान होते हैं। ये लोग चैनलों के लिए वे देवता हैं जो सुबह-सुबह अपनी मनोहर वाणी से टीआरपी की वर्षा करते हैं। किन्तु जब यह बाबा किसी विवाद-शोषण आदि के मामलों में फंसते हैं तो चैनल वाले सबसे पहले इन्हें गुरु घंटाल बताकर उनका चीरहरण करने से नहीं चूकते।

दरअसल ये धर्म का वह भाग है जिसे भक्त आस्था और बाबा व्यापार से जोड़कर देखते हैं। कहा जाता है कि समृद्धि के साथ-साथ अंधविश्वास भी बढ़ता है। लोग अपना रुतबा, अपनी दौलत कायम रखने के लालच में इसे बढ़ाते हैं। जो जितना समृद्ध, वह उतना ही अंधविश्वासी। इसी समृद्धि के पीछे भागता मध्यमवर्ग तो भला गरीब ही इस मामले में क्यों पीछे रहेगा। जीवन ही जरूरत का दूसरा रूप है और जरुरत सबकी अपनी-अपनी है अत: सिंहासन पर विराजमान बाबा लोगों की जरूरत पूरी होने के नुख्से जो बता रहे हैं।

हालाँकि भक्तों की आस्था से बाबाओं ने लगातार खेल खेला है। हो सकता है इस समय भी देश के किस कोने में ना जाने कौन सा बाबा भक्तों से भक्ति का खेल रहा हो। हाल ही में बाबाओं के बीच से दिल्ली से ये जो नया बाबा पकड़ में आया है इसने तो कमाल ही कर दिया। धर्म और आस्था के नाम पर जो दुकान सजाई वो पूरी की पूरी दुकान ही ढोंग की निकली। पुलिस आशू महाराज को खोज रही थी और महाराज में से निकला आसिफ खान; जिसे भक्त आशु भाई गुरुजी मानकर चरणों में शीश नवा रहे थे वो दरअसल आसिफ खान निकला है। वोटर लिस्ट पर आशु भाई गुरुजी की तस्वीर लगी है और उसके आगे लिखा हुआ है आसिफ खान पुत्र श्री इदहा खान। वोटर लिस्ट में गलती की गुंजाइश इसलिए नजर नहीं आती क्योंकि ठीक उसी के नीचे उसी पते पर रहने वाले आसिफ खान के बेटे समर खान की भी तस्वीर लगी है।

साल 1990 से आशु भाई का भविष्य बताने का ये धंधा इतना फला फूला कि आज दिल्ली के कई इलाकों में बाबा की करोड़ों की प्रापर्टी है। जिसमें प्रीतम पुरा के तरुण एंकलेव में मकान, रोहिणी सेक्टर 7 में आश्रम और साउथ दिल्ली के हौजखास जैसे पॉश इलाके में ऑफिस है। और तो और बाबा ने अब अपना बिजनेस इतना बढा लिया था कि वो आयुर्वेदिक डॉक्टर भी गया था। जहां इलाज भी खुद करता था और दवाएं भी खुद बनाता था। यानि पूर्ण उपचार ग्रह-नक्षत्र से लेकर भूत-भविष्य तक और पेट की मरोड़ से लेकर असाध्य रोगों तक। मतलब एक बार मुर्गा फंस गया तो ये बाबा उसका खून तक चूस लिया करता था। लेकिन भक्त विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य हस्तरेखा विशेषज्ञ और काले जादू का महारथी मानकर कोटि कोटि नमन कर रहे थे।

ये उस देश का हाल है जहाँ हर तीसरे महीने कोई न कोई बाबा पकड़ में आता रहता है। लेकिन बेखोफ बाबा जनता दरबार सजाएं बैठे हैं। ऑनलाइन से लेकर अपनी गुफाओं तक में इनके व्यापार फल-फूल रहे हैं। लगातार धोखाधड़ी में पकडे गये बाबाओं की गिरफ्तारी से भक्त ये तो समझ रहे हैं कि कुछ बाबा लोग बुरे हैं लेकिन इनके अपने बाबा अभी भी भगवान है, यानि जो पकड़ा गया वो शैतान जो अभी पकड़ से बाहर है वो भगवान।

मंच सजते हैं, भक्त सवाल पूछते हैं और बाबा जवाब देते हैं। परेशानी भले ही सामान्य हो लेकिन बाबाओं के जवाब असामान्य होते हैं। जब एक छात्रा पूछती है कि बाबा मैं कॉमर्स लूँ या साइंस? तब बाबा कहते हैं- पहले ये बताओ आखिरी बार समोसा कब खाया था? एक बेरोजगार और परेशान युवा पूछता है, बाबा नौकरी कब मिलेगी? बाबा कहते हैं क्या कभी कुत्ते को डंडे से मारा है? यानि सवाल और सुझाव का कोई तुक नहीं होता।

......मंच सजते हैं, भक्त सवाल पूछते हैं और बाबा जवाब देते हैं। परेशानी भले ही सामान्य हो लेकिन बाबाओं के जवाब असामान्य होते हैं। जब एक छात्रा पूछती है कि बाबा मैं कॉमर्स लूँ या साइंस? तब बाबा कहते हैं- पहले ये बताओ आखिरी बार समोसा कब खाया था? एक बेरोजगार और परेशान युवा पूछता है, बाबा नौकरी कब मिलेगी? बाबा कहते हैं क्या कभी कुत्ते को डंडे से मारा है? यानि सवाल और सुझाव का कोई तुक नहीं होता। ....

किन्तु स्कूल के विषय पूछती छात्रा, नौकरी के लिए तरसता युवा या फिर बेटी की शादी न कर पाने में असमर्थ कोई गरीब बाप इन बाबाओं का लक्ष्य नहीं है। इनका लक्ष्य हैं मध्यमवर्ग और बड़े-बड़े अभिनेता और व्यापारिक घराने या फिर राजनेता जो इन बाबाओं के प्रति लोगों की श्रद्धा देखकर इनकी शरण में आ जाते हैं। बाबा तलाश में रहते है, एक बार किसी बड़े नेता, अभिनेता या व्यापारिक घराने से जुड़े व्यक्ति के साथ उनकी फोटो छप जाये तो इनके भक्त निहाल हो जाते हैं कि देखों बाबा त्रिलोकी हो गये अब हम अकेले भक्त नही हमारे साथ नेता-अभिनेता भी शामिल है। बाबाओं के होटल हैं, बंगले हैं, बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ हैं। भक्त दावा करते हैं कि हर दिन लाखों-करोड़ों का चढ़ावा आ रहा है। 21वीं सदी का भारत कौन कहता है भारत में पैसे की कमी है?

बस यही भक्ति का वो बाजार है जो आस्था के बल देश में बाबा और उनकी सम्पत्ति को बढाकर उन्हें सिंहासन प्रदान कर रहा है। जिसके लिए गरीब से गरीब और धनी से धनी बाबा के लिए अपनी संपत्ति कुर्बान कर देना चाहता है। हालाँकि बाबाओं को लेकर भारतीय जनता का प्रेम नया नहीं है। कभी किसी बाबा की धूम रहती है तो कभी किसी बाबा की। कभी आसाराम बापू और गुरमीत राम रहीम, भी भक्ति के बाजार के बड़े प्रोडक्ट रहे थे। इसके बाद शनिधाम मंदिर के संस्थापक दाती महाराज से भी भक्तों ने कई वर्षों तक शनि उतरवाया, फिर बाबा वीरेंद्र दीक्षित, भीमानन्द और पता नहीं कितने बाबा अपने बुरे कुकर्मों की वजह से जेल में बंद हैं। तो बाबा आशु उर्फ आसिफ खान का यौन-शोषण में पकड़ा जाना कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात बस ये है कि अन्य पन्थों के लोग समझ चुके हैं कि हिन्दुओं का अन्धविश्वास किसी को भी मालामाल कर सकता है?

- सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

कौन थे आर्य? क्या अब बदलेगा इतिहास?

.....आज मात्र एक कंकाल के डीएनए से यह साबित किया जा रहा है कि उसका डीएनए दक्षिण भारतीय लोगों से काफी मिलता है पर क्या ऐसा नहीं हो सकता कि यह कंकाल किसी व्यापारी, भ्रमण पर निकले किसी जिज्ञाशु अथवा किसी राहगीर का नहीं होगा? यदि कल दक्षिण भारत में मिले किसी कंकाल का डीएनए उत्तर-भारत के लोगों से मिलता दिख जाये तब क्या यह सिद्धांत खड़ा कर दिया जायेगा कि आर्य मूल निवासी थे और द्रविड़ हमलावर उन्होंने समुद्र के रास्ते हमला किया और इस भूभाग पर कब्जा कर लिया?.....

आर्य कौन थे? पहली बात तो यह कोई प्रश्न ही नहीं है। किन्तु सन 1920 के बाद से इसे प्रश्न बनाकर सबसे पहले अंग्रेज इतिहासकारों और उनके बाद कुछ भारतीय इतिहासकारों द्वारा इतना उलझाया गया कि आधुनिक पीढ़ी के सामने आर्य कौन थे, कहाँ से आये थे? वह भारतीय थे या बाहरी थे? वह किस संस्कृति के पुजारी थे, उनका मूल धर्म क्या था? आदि-आदि सवाल पर सवाल खड़े किये गये। धीरे-धीरे काल बदल रहा है, देश में सरकारें बदल रही हैं, इतिहासकार बदले, सोच बदली यदि कुछ नहीं बदला सिर्फ एक सवाल कि आर्य कौन थे?

हाल ही में हरियाणा के राखीगढ़ी से मिले 4,500 साल पुराने कंकाल के "पेट्रस बोन" के अवशेषों के अध्ययन का पूरा परिणाम सामने आने जा रहा है। एक बार फिर सवाल यही होगा कि क्या हड़प्पा सभ्यता के लोग संस्कृत भाषा और वैदिक हिंदू धर्म की संस्कृति का मूल स्रोत थे? असल में पुरातत्ववेत्ता तथा पुणे के डेक्कन कॉलेज के कुलपति डॉ. वसंत शिंदे की अगुआई वाली एक टीम द्वारा 2015 में की गई खुदाई के बहुप्रतीक्षित और लंबे समय से रोककर रखे गए परिणामों में ऐसे अब खुलासे होने वाले हैं। एक कंकाल को आधार बनाकर एक बार फिर यही साबित करने का प्रयास किया जायेगा कि आर्य बाहरी और हमलावर थे।

क्योंकि जब 1920 के दशक में सिंधु घाटी सभ्यता पहली बार खोजी गई थी, तब अंग्रेज पुरातत्वविदों ने इसे तत्काल पूर्व-वैदिक काल की सभ्यता-संस्कृति के सबूत के रूप में स्वीकार लिया और उन्होंने आर्य आक्रमणकारियों का एक नया सिद्धांत दिया और कहा कि उत्तर-पश्चिम से आए आर्यों ने हड़प्पा सभ्यता को पूरी तरह नष्ट करके हिंदू भारत की नींव रखी।

हालाँकि वसंत शिंदे यह मत रखते हैं कि जिस तरह से राखीगढ़ी में समाधियां बनाई गई हैं वह प्रारंभिक वैदिक काल सरीखी है। साथ ही वह ये भी जोड़ते हैं कि राखीगढ़ी में जिस तरह से समाधि देने की परंपरा रही है वह आज तक चली आ रही है और स्थानीय लोग इसका पालन करते हैं। लेकिन इसके साथ ही वह जोड़ते है कि यह वही काल है जिसमें आर्यों का भारत में प्रवेश माना जाता है, जैसा कि आर्य आक्रमण सिद्धांत मानने वाले निष्कर्ष निकालते हैं।

चलो एक पल के लिए हम स्वीकार भी लें कि पश्चिमी विद्वान वास्तव में सही हैं और 1800 ईसा पूर्व के बाद आर्यों ने भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश किया और यहाँ के मूलनिवासियों पर हमला कर विशाल भूभाग पर कब्जा कर लिया। किन्तु ध्यान देने योग्य है कि राखीगढ़ी या हड़प्पा में किसी तरह की हिंसा, आक्रमण, युद्ध का संकेत नहीं मिलता है। किसी तरह के विनाश का संकेत नहीं है और कंकालों पर किसी तरह की चोट का निशान नहीं है।

दूसरा आर्य बाहरी और वेद को मानने वाले लोग थे। यदि यह एक पल को यह स्वीकार कर भी लिया जाये तो आर्य कहाँ से आये और जहाँ से वह आये थे आज वहां वैदिक सभ्यता के लोग क्यों नहीं रहते है? क्या वहां एक भी वैदिक सभ्यता का नागरिक नहीं बचा था?

आज मात्र एक कंकाल के डीएनए से यह साबित किया जा रहा है कि उसका डीएनए दक्षिण भारतीय लोगों से काफी मिलता है पर क्या ऐसा नहीं हो सकता कि यह कंकाल किसी व्यापारी, भ्रमण पर निकले किसी जिज्ञासु अथवा किसी राहगीर का नहीं होगा? यदि कल दक्षिण भारत में मिले किसी कंकाल का डीएनए उत्तर-भारत के लोगों से मिलता दिख जाये तब क्या यह सिद्धांत खड़ा कर दिया जायेगा कि आर्य मूल निवासी थे और द्रविड़ हमलावर उन्होंने समुद्र के रास्ते हमला किया और इस भूभाग पर कब्जा कर लिया?

यह एक काल्पनिक मान्यता है कि आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया, उन्होंने निश्चित रूप से भारत पर आक्रमण नहीं किया क्योंकि उस समय भारत था ही नहीं वास्तव में भारत को एक सभ्यता के केन्द्र के रुप में आर्यों ने ही विकसित किया था। पश्चिमी पुरातत्ववेत्ता एक तरफ तो आर्यों के भारत के बाहर से आने की सिद्धांत का समर्थन करते हैं, दूसरी ओर उनके अनुसार द्रविड़ भाषा बोलने वाले सिंध के रास्ते भारत में प्रवेश कर रहे थे तो आखिर भारत के मूल निवासी थे कौन?

तीसरा आर्य बाहरी थे, उनकी भाषा संस्कृत थी। तो आज यह भाषा भारत के अलावा कहीं ओर क्यों नहीं दिखाई देती? क्यों उत्तर और भारत दक्षिण भारतीयों के धार्मिक ग्रन्थ, धार्मिक परम्परा एक हो गयी? अरबो, तुर्कों अफगानियों ने भारत पर हमला किया अनेक लोग यहाँ बस भी गये तो क्या उनकी भाषा, उनका मत उनके देशों से समाप्त हो गया?

आज सामाजिक और धार्मिक स्तर पर वियतनाम, थाईलेंड, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, सुमात्रा, म्यांमार आदि देशों में भारतीय वैदिक परम्परा के चिन्ह मिलते हैं, क्या इन देशों में भी आर्यों ने आक्रमण किया? हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि आर्य, चाहे वे मूल रूप से मंगल के निवासी हों या फिर भारत के, भारतीय सभ्यता के निर्माता वही थे। इस उल्लेखनीय सभ्यता और सांस्कृतिक एकता को भारतीय सभ्यता के रूप में जाना जाता है, इसकी जड़ें वैदिक संस्कृति में थीं जिसकी खनक पूरे देश में सुनाई देती है।

आखिरकार, यदि वैदिक लोग भारत के लिए विदेशी हैं क्योंकि वे 1800 ईसा पूर्व में कथित रूप से भारत में प्रवेश कर चुके थे, तो फारसियों ने भी 1000 ईसा पूर्व के बाद फारस में प्रवेश किया था तो क्या वह भी फारस के लिए विदेशी हैं? 2000 ईसा पूर्व के बाद ग्रीस में प्रवेश करने वाले ग्रीक, वहां के लिए विदेशी हैं? फ्रांसीसी फ्रांस के लिए विदेशी हैं क्योंकि उन्हें भी पहली शताब्दी ई.पू. में रोमन विजय के दौरान लैटिन उपनिवेश वादियों द्वारा लाया गया था? यदि सब विदेशी हैं तो क्या आज समस्त संसार में कोई भी मूल निवासी नहीं है। इससे पता चलता है कि यह सब हम भारतीय हिंदूओं को अपराधबोध से ग्रसित करने के लिए, आपस में बाँटने के लिए काल्पनिक इतिहास घड़ दिया गया है।

वैदिक लोग भारतीय सभ्यता के निर्माता हैं इस तथ्य को कोई भी नहीं बदल सकता है कि यही वह वैदिक संस्कृति थी जिसने भारतीय सभ्यता के जन्म को जन्म दिया। वैदिक धर्म भारत की मूल संस्कृति है और कुछ भी इस तथ्य को बदल नहीं सकता है। बाकि कुछ महीनों में साफ हो जाएगा। मगर अभी तक जो कुछ भी राखीगढ़ी और यूपी के सिनोली में मिला है, उससे एक बात तो साफ है कि इतिहास में कुछ तो जरूर बदलेगा?

- राजीव चौधरी

क्रान्तिकारियों की कथा

अमर शहीद राजगुरु

गतांक से आगे -

मंगलवार, 24 फरवरी, 1931 : कानपुर शहर। जाड़े की ठंडी रात। दस बजे होंगे। चुन्नीगंज की ओर से सरपट दौड़ता हुआ एक तांगा जी.पी.ओ. के सामने क्षण-भर रुका। साफ़-सुथरी माल रोड पर बिजली की तेज़ रोशनी पड़ रहीं थी। तांगे की पिछली सीट पर बैठे गेहुंए रंग, मझोले क़द, गठीले जिस्म के व्यक्ति ने चारों ओर नज़र दौड़ाई और सहसा तांगे वाले को आदेश दिया- 'सीधे।'' तांगा माल रोड पर सरपट दौड़ने लगा।

क्राइस्ट चर्च कालेज के पास पहुंचते ही उसने फिर रोबीले ढंग से कहा, ''और तेज़''।

घोड़े पर चाबुक बरसने लगे। तांगा हवा से बातें करने लगा। केवल घोड़े की टापों की आवाज़ ही रात की नीरवता को भंग कर रही थी। मेमोरियल गार्डन के चौराहे पर 'रोको' शब्द सुनते ही तांगे वाले ने रास खींच ली। वेग से दौड़ता हुआ घोड़ा डामर की उस पक्की सड़क पर दो-चार क़दम घिसटने के बाद तुरन्त रुक गया।

खद्दर का कुर्ता-पाजामा, सदरी पहने, भूरे रंग का शाल ओढ़े वह व्यक्ति तांगे से उतरा। तांगे वाले के हाथ में चांदी का एक रुपया टिकाया। सलाम बजाकर वह फ़ौरन वहां से नौ दो ग्यारह हुआ। चौड़ी सड़क पर इधर-उधर नज़र डालते हुए वह खद्दरधारी आगे बढ़ा और फूलबाग के नज़दीक आकर रुक गया। इधर-उधर फिर देखा। पास में कोई न था। पीछे से साइकिल पर सवार जी. एम. पी. (गेरिज़न मिलिटरी पुलिस) के दो गोरे सारजेण्ट उसे अंग्रेजी में गाली देते हुए आगे बढ़ गये। बिना वजह गाली खाने पर भी वह उन्हें असहाय की भांति देखता रहा। कर कुछ न सका। हालांकि वह उन्हीं के राज्य की नींव भारत में मज़बूत करने के लिए दिन-रात एक कर रहा था।

वह व्यक्ति कोई और नहीं यू. पी. सी. आई. डी., स्पेशनल ब्रांच का इंस्पेक्टर शम्भूनाथ था, जिसे ब्रिटिश हुकूमत ने 'हिन्दुस्तान सोशलिसट रिपब्लिकन आर्मी' के प्रधान सेनापति चन्द्रशेखर आज़ाद को ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ने का कार्य-भार सौंपा था। फूलबाग़ चौराहे पर सन्नाटा था। शम्भूनाथ ने रामनारायण बाज़ार का रास्ता पकड़ा।

- क्रमशः

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्यजन महासम्मेलन में अपनी समाज की बैच लगाकर आएँ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आने वाले सभी आर्यजन भाई-बहन अपनी पहचान के लिए अपनी आर्य समाज का सुन्दर बैच लगाकर आएँ। बैच में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का लोगो, महर्षि दयानन्द का सुन्दर चित्र, अपने आर्य समाज का नाम, अपना नाम व पता अवश्य अंकित करें। इससे आप की पहचान जहाँ आप के आर्य समाज और जनपद के साथ बनी रहेगी वहीं पर आम जनता में भी आर्य समाज और इस महासम्मेलन की चर्चा हो जाएगी। सम्मेलन का लोगो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की वैबसाइट www.arya mahasammelan.org अथवा दिल्ली सभा की वैबसाइट www.thearya samaj.org से डाउनलोड किया जा सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-26-27-28 अक्टूबर, 2018

महासम्मेलन के चारों दिन (25-28 अक्तूबर) तक आयोजित होने वाले विषय अनुसार महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों का विवरण

२५ अक्टूबर, २०१८ : उद्घाटन सम्मेलन, वेद सम्मेलन, अंधविश्वास निवारण सम्मेलन, आर्यवीर सम्मेलन, भजन एवं गीत संध्या

२६ अक्टूबर, २०१८ : निरन्तर क्रियाशील आर्यसमाज, संस्कृति एवं सामाजिक संचेतना सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, लेजर शो, भजन प्रस्तुति, मानव कल्याण एवं विश्व शान्ति एकता यज्ञ (एकरुपीय यज्ञ-प्रशिक्षित याज्ञिकों द्वारा - मुख्य पंडाल में सीधा प्रसारण), महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सम्मेलन, कवि सम्मेलन

२७ अक्टूबर, २०१८ : राष्ट्र चिन्तन सम्मेलन, विश्व आर्यसमाज सम्मेलन, आर्य परिवार सम्मेलन, व्यायाम प्रदर्शन, आर्यसमाज सेवा कार्य सम्मेलन, भजन संध्या

२८ अक्टूबर, २०१८ : संकल्प सत्र, आर्य सांगठनिक सम्मेलन, समापन सत्र

महासम्मेलन में विचारणीय कुछ मुख्य विषय

- संस्कारित परिवार - समाज निर्माण
- जनसंख्या का सांस्कृतिक/वैचारिक असंतुलन-एक नए खतरे का संकेत
- मानव निर्माण का आधार
- मानव की आवश्यकता - आध्यात्म एवम् योग
- विश्व स्तर पर असंतुलित लिंग अनुपात
- बदलते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य-समाधान क्या? कैसे?
- निरन्तर बढ़ता प्रदूषण - मानव जाति के लिए चुनौती- यज्ञ एवं सौर ऊर्जा सर्वोत्तम समाधान
- शिक्षा - केवल रोजगार या मानव उन्नति का साधन?
- बढ़ती नशा प्रवृत्ति - जिम्मदारी कानून की या समाज की?
- अंधविश्वासों का बढ़ता विश्वव्यापी व्यापार - निराकरण हेतु हमारी भूमिका : जनचेतना व धार्मिक भ्रष्टाचार निरोधक कानून ही उपाय
- गोरक्षा, आयुर्वेद, धर्मान्तरण, तुष्टीकरण
- बढ़ती जाति की दीवारें - समाज संस्कृति व राष्ट्र के लिए घातक
- वर्ण व्यवस्था -वास्तविक मनुवाद
- आर्यसमाज - नए युग में प्रवेश - दृष्टि २०२४-२०२५
- सोशल नेटवर्किंग - समाज में बदलाव-सुधार या बिखराव
- मानव सम्बन्ध - न्यायालयीय आदेश/निर्देश - स्वीकार्यता
- परिवारिक परिस्थिति - रिश्तों को बचाईए
- आर्य (हिन्दू) जाति में ऊंच-नीच का विभाजन
- देश में दलित व मुस्लिम गठजोड़ - एक अन्तर्राष्ट्रीय साजिश
- एकाकी संतान - बच्चे तथा परिवार के विकास के लिए घातक
- दूषित अन्न - स्वास्थ्य का शत्रु - जीरो बजट खेती-एक समाधान
- एक मंदिर एक शमशान-तभी होगा भारत महान
- आर्यसमाज की भावी कार्य पद्धति व योजना
- संकल्प सत्र एवं आओ करें, कल की बातें

एक रुपीय यज्ञ हेतु दिल्ली में अनेक स्थानों पर यज्ञ प्रशिक्षण : विश्व रिकार्ड की तैयारी

आप आर्यसमाज के अधिकाधिक सदस्यों के साथ भाग लें : प्रशिक्षण/जानकारी हेतु श्री सतीश चड्डा जी 9313013123 से सम्पर्क करें

दिल्ली में अक्तूबर, 2018 में आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर होने वाले विशाल एक रूपीय यज्ञ की तैयारी हेतु दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों एवं संस्थाओं में यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इस हेतु सभा की आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के अन्तर्गत संवालित रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज सरोजनी नगर तथा महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल आर्यसमाज न्यू मोती नगर में यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न इस प्रशिक्षण शिविर में श्री सत्यप्रकाश जी के सानिध्य में छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इन शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों को महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित विशाल एकरूपीय यज्ञ कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाएगा। यदि आप भी प्रशिक्षण प्राप्त करके महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित होने वाले एक रूपीय यज्ञ में भाग लेना चाहते हैं तो अपनी आर्यसमाज/विद्यालय/संस्थान में आयोजित करने हेतु **यज्ञ व्यवस्था संयोजक श्री सतीश चड्डा जी से 9313013123** पर सम्पर्क करें। - ***संयोजक***

सम्मेलन सहयोग के लिए आर्यसमाज नजफगढ़ में बैठक सम्पन्न – अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियों एवं सहयोग एकत्र करने के लिए दिल्ली में सम्पर्क अभियान चल रहा है। इसके अन्तर्गत सभा प्रधान एवं महासम्मेलन संयोजक श्री धर्मपाल जी आर्य ने आर्यसमाज नजफगढ़ के अधिकारियों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की बैठक ली। बैठक में श्री सर्वश्री जगदीश मलिक, कै. ओम प्रकाश, बी.डी. लाम्बा सहित अन्य अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया एवं पूर्ण सहयोग का आश्वासन प्रदान किया।

यज्ञ सम्पन्न कराते वैदिक विद्वान

भव्य शोभाया को ओमध्वज दिखाकर रवाना करते सम्मेलन संयोजक एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी

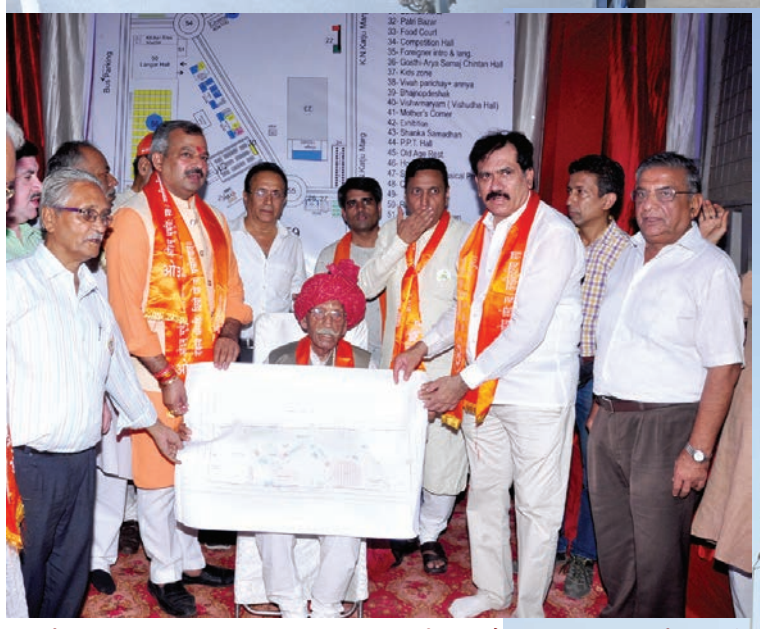

महर्षि दयानन्द नगर का नक्शा अनावरण करते महापौर एवं महाशय धर्मपाल जी

यज्ञशाला का पिल्लर (बल्ली) स्थापित करते महाशय धर्मपाल जी

सम्मेलन स्थल पर वृक्षारोपण

शिलान्यास समारोह में पधारे विद्वान महानुभावों से आशीर्वाद प्राप्त करते सभा अधिकारी एवं आर्य महासम्मेलन संयोजक समिति के सदस्यगण

Veda Prarthana - II
Regveda - 20/1

God is all Knowing, All Seeing, and is Present Everywhere

- Acharya Gyaneshwarya

सहिस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः
सहस्त्रपात्। स भूमि सर्वत
स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।
– यजुर्वेद 31/1

Sahasrasheersha purushah
sahasarakshah sahasrapat.
Sa bhumim sarvata sprata
atyatishthtat dashangulm.
- Yajurveda 31/1

This veda mantra in a symbolic manner tries to describe the attributes and dimensions of God who atually is beyond measure. The first thing this Veda mantra states that among God's many names, one name is Purusha. The word Purusha means one who permeates and exists everywhere in the puri i.e. in the universe. This relattionship of God and the universe is sometimes compared to that of a cotton ball (universe) immersed (soaking) in a large bucket of water (God), where water exists both inside the cotton ball and outside it. The second example is of Indian dessert rasagulla-sweet cheese-ball soaking in syrup, where the syrup exists both inside the cheese-ball and outside it. Similarly, God permeates inside the universe but also surrounds the vast universe and exists outside it. The mantra indirectly is stating that God is much greater than the universe.

The universe is so massive that its overall dimensions are beyond the imagination of us ignorant human beings. Scientists using all types of earth and space located telescopes are trying to see and understand the vast expanse of the universe. Currently, the scientists estimate that there are 100-200 billion or more galaxies in the universe and in each galaxy, there are billions of stars, planets, and satellites. Many solar/star systems also have earth like planets. It is estimated that our Milky Way galaxy has 200-400 billion stars and 17 billion earth size planets.

Scientists recognize their current limitations in understanding the vastness of the universe and believe that if they had better talescopic instruments perhaps they would find even more galaxies. Moreover, if we could theoretically plant telescopic instruments in a planet of a far away galaxy, perhaps we would find many fold more galaxies in the universe that are currently beyond our identification or recognition. Therefore, we ignorant human beings should remain humble in describing God and His vastness.

The word Purusha also means that just as God exists everywhere in the universe, similarly, He exists and permeates inside all living beings, including inside our heads, hearts, bellies, eyes, ears, hands, feet, mind and even our souls. God is ultimately responsible for creating our physical body. God does not separate from us after creating us, unlike an artisan who separates from his/her physical creation. Moreover, God not only exists inside us, but also is active inspiring us to do virtuous deeds and warning us to stay away from bad deeds. God as Supreme Consciousness has been within us from the day we were conceived and will remain so throughout our life. Moreover, God is the root source of the energy that helps us perform our various bodily functions such as breathe, eat, drink, digest food, make blood etc. Because God is present inside our body and soul, He is witness at all moments to all our deeds, whether they be in our mind at the thought level, in our words or at the action level. God as the karmaphaldata- Final Judge in the Universe is not only a witness to our deeds but also gives us appropriate awards to all of us depending upon our karmas i.e. deeds. **- Contd.....**

शोक समाचार

श्री वेद प्रकाश गुप्ता जी का निधन

द्रोण स्थली कन्या गुरुकुल देहरादून के संस्थापक, समाजसेवी डॉ. वेद प्रकाश आर्य (गुप्ता) जी का 7 सितम्बर को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल वह वह प्राण थे। उनका सम्पूर्ण जीवन वैदिक विचारधारा से ओत-प्रोत था। गुरुकुल की कन्याओं के सर्वांगीण विकास के लिए वे पूर्णत: समर्पित थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

वैदिक विद्वान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया नहीं रहे

सुविख्यात लेखक, वैदिक विद्वान, आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी के पूर्व प्रधान डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी का दिनांक 15 सितम्बर, 2018 की प्रात:काल निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया, जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के सदस्यों एवं पदाधिकारिगण सम्मिलित हुए। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा मंगलवार दिनांक 18 सितम्बर, 2018 को आर्यसमाज जनकपुरी नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा दिल्ली सभा के साथ-साथ अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। अभी हाल ही में दिल्ली सभा ओर से डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी को साहित्य क्षेत्र में पद्मश्री सम्मान दिलाने के लिए नामित भी किया गया था।

श्रीमती सुषमा सेठ का निधन

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की उप प्रधाना एवं आर्यसमाज कीर्ति नगर की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती सुषमा सेठ जी का दिनांक 13 सितम्बर, 2018 को हृदय गति रूकने के कारण निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 14 सितम्बर को आर्यसमाज कीर्ति नगर में सायं 3-4 बजे सम्पन्न हुई जिसमें दिल्ली सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, आर्य वीर दल, प्रान्तीय महिला सभा एवं निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री जगदीश सिंह वर्मा का निधन

आर्यसमाज सुन्दर विहार पूर्व मन्त्री एवं संरक्षक श्री जगदीश सिह वर्मा जी का दिनांक 15 सितम्बर, 2018 को लगभग 94 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पंजाबी बाग शमशानघाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 23 सितम्बर, 2018 को समुदाय भवन सुन्दर विहार में प्रात: 9 बजे से आरम्भ होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर

21-22वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 21वां सम्मेलन उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल युवक युवतियों के लिए तथा 22वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सम्मेलन स्थल - स्वर्ण जयन्ती पार्क, सैक्टर-10, रोहिणी नई दिल्ली में 26-27 अक्तूबर को प्रात: 10 बजे किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। **उच्च वर्ग के लिए पंजीकरण शुल्क 800/- रुपये** एवं **सामान्य वर्ग के लिए पंजीकरण शुल्क 300/-** है। पंजीकरण फॉर्म **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आवेदन हेतु पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम वर्गानुसार राशि **800/- अथवा 300/- रुपये** का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **खाता संख्या 910010001816166 IFSC - UTIB0000223 एक्सिज बैंक करोल बाग शाखा** में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन भेजने की **अन्तिम तिथि 15 अक्तूबर, 2018** है। इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)
श्रीमती विभा आर्या, संयोजिका (मो. 9873054398)

प्रेरक प्रसंग

लोकैषणा से दूर

कीर्ति की चाहना कोई बुरी बात नहीं, परन्तु यश की चाहना और बात है और मान-प्रतिष्ठा की भूख दूसरी बात है। जब नेता लोग प्रतिष्ठा पाने के लिए व्याकुल हो जाते हैं तो सभा-संस्थाएँ पतनोन्मुख हो जाती है। नेताओं का व्यवहार कैसा होना चाहिए यह निम्न घटना से सीखना चाहिए।

पण्डित श्री गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय वैदिक धर्म प्रचार के लिए केरल गये। चैंगत्रूर नगर में उनके जलूस के लिए लोग हाथी लाये। उपाध्यायजी ने हाथी पर बैठने से यह कहकर इन्कार कर दिया कि यहाँ तो लोग निर्धनता के कारण ईसाई बन रहे हैं और आप मुझे हाथी पर बिठाकर यह दिखाना चाहते हैं कि मैं बड़ा धनीमानी व्यक्ति हूँ या मेरा समाज बड़ा साधन-सम्पन्न है। लोकैषणा से दूर उपाध्यायजी पैदल चलकर ही नगर में प्रविष्ट हुए। - ***प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्मेलन स्मारिका : न जाने दें विज्ञापन प्रकाशन का अवसर

सभी आर्य समाजें व आर्य संस्थाएँ विज्ञापन अवश्य भेजें

यदि आप सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में विज्ञापन रूप में अपनी आर्यसमाज / संस्था की विशेष गतिविधियों का विवरण प्रकाशित करना चाहते है, जिससे आर्यसमाज के इतिहास में आपकी संस्था का नाम अंकित हो। स्मारिका 15 अक्टूबर तक तैयार हो जायेगी और 23×36×8 साईज में प्रकाशित होगी। पूरे पृष्ठ का विज्ञापन साईज 7.5"×10" का एवं आधे पृष्ठ का साईज 7.5"×5" होगा। आप अपना चैक/ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम केवल खाते में उक्त पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। विज्ञापन सामग्री एवं डिजाईन हमें 30 सितम्बर 2018 तक अवश्य भिजवा दें। दरें निम्न प्रकार हैं -

(श्वेत श्याम विज्ञापन)		(रंगीन- चार रंगों में विज्ञापन)	
1. चौथाई पृष्ठ	5000/-	4. चौथाई पृष्ठ	7500/-
2. आधा पृष्ठ	7500/-	5. आधा पृष्ठ	12500/-
3. पूरा पृष्ठ	10000/-	5. पूरा पृष्ठ	21000/-

आवास व्यवस्था हेतु कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर यदि आप सम्मेलन स्थल मैदान में ही बनें आवासों में ठहरने की व्यवस्था चाहते हैं तो कृपया ध्यान दें -

1. सम्मेलन के दिनों में रात्रि का मौसम हल्की ठंड वाला होगा। अत: अपने ओढ़ने एवं बिछाने के लिए सामान्य चादर या पतला कम्बल अवश्य साथ लाएं, जिससे आपको सुविधा हो।

2. जो महानुभाव ग्रुप में आ रहे हैं। वे अपने ग्रुप लीडर का नाम, पता, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर आवास समिति के नाम सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमल करें। अपने ईमेल/पत्र पर **"आवास व्यवस्था हेतु"** अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था की जा सके।

जो व्यक्ति एक साथ, एक ही साधन से एक ही समय पर पहुंच रहे हैं, उसे ही ग्रुप कहा जाएगा। अत: यदि आप एक ही संस्था/आर्यसमाज के सदस्य होने पर भी अलग-अलग समय/साधन से आ रहे हैं तो उसके लिए पृथक से ग्रुप लीडर बनाएं और उसी के हिसाब से पधारने वाले सज्जनों की सूची भेजें।- ***संयोजक, आवास***

सार्वदेशिक सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2018
25-28 अक्तूबर, 2018 : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै.-10, रोहिणी, दिल्ली

मुख्य पंजीकरण फार्म

पंजीकरण संख्या ..... जन्मतिथि:...../...../.....
नाम.....
पिता/पति का नाम .....
मोबाइल .....व्हाट्एप्प.....
फोन (नि.) .....(कार्या.).....
ई-मेल .....
पूरा पता .....
.....
राज्य .....देश .....पिन ☐☐☐☐☐☐
शैक्षिक योग्यता (अन्तिम): .....
व्यवसाय: व्यापार ☐ सेवारत ☐ सेवानिवृत ☐ अन्य ☐
यदि सेवारत हैं तो पद .....
संस्था का नाम-पता.....
.....
सम्बन्धित आर्यसमाज/संस्था का नाम .....
क्या आप भविष्य में सभा द्वारा भेजी गई सभी सूचनाओं के SMS/Whatsapp अपने दिए गए मोबाईल पर प्राप्त करना चाहेंगे? हां ☐ नहीं ☐
दिनांक ..... हस्ताक्षर .....

पंजीकरण संख्या ..... जन्मतिथि:...../...../.....
नाम.....
दिनांक ..... समय .....

(हस्ताक्षर कार्यालय प्रतिनिधि)

ठहरने के लिए क्या आप 'होटल' चाहते हैं

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आप की भागीदारी महत्त्वपूर्ण है। आप सभी का सहर्ष स्वागत है। आप इस अवसर पर अधिकाधिक संख्या में आएँ और अन्यों को इसके लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर यदि आप ठहरने के लिए होटल में आवास सुविधा चाहते हैं तो संयोजक समिति द्वारा कुछ होटलों में सशुल्क आवास व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है। सामान्य होटल करोल बाग क्षेत्र में मैट्रो के निकट, रोहिणी क्षेत्र में 2 स्टार ओयो रुम सम्मेलन स्थल से 2 किमी क्षेत्र में तथा 3 स्टार होटल सम्मेलन स्थल से 3-4 किमी की दूरी पर हैं। होटल शुल्क (सभी करों सहित) इस प्रकार है-

सामान्य होटल (करोलबाग): 1500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए
2 स्टार ओयो रुम : 2500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए
3 स्टार (विद ब्रेक फास्ट) : 3500/- रुपये प्रति रात्रि दो व्यक्तियों के लिए

यदि आप कमरे में तीसरे बैड की व्यवस्था चाहते हैं तो अतिरिक्त शुल्क पर बैड उपलब्ध हो सकेंगे। उसके लिए आपको स्वयं होटल में बात कर लें। अनुमानित रूप से तीसरे बैड के लिए सामान्य होटल में 300/-, 2स्टार में 500/- तथा 3 स्टार में 800/- रुपये में देय होंगे। अतिरिक्त बैड की ये दरें अनुमानित हैं। इसके लिए आप स्वयं अपने आबंटित होटल में पहुंचकर बात करें।

इसके अतिरिक्त राहिणी क्षेत्र में **2000/- रुपये प्रति रात्रि तीन लोगों के लिए भी सामान्य होटल** उपलब्ध हैं।

सभी होटल पूर्णत: ए.सी., अटैच टॉयलेट और आवश्यक सुविधाओं से युक्त हैं। यदि आप सुविधा का लाभ उठाना चाहते है तो देय राशि का बैंक ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन-2018"** के नाम बनाकर अपने नाम, पता एवं दूरभाष सहित पूर्ण विवरण पत्र द्वारा सम्मेलन कार्यालय को भेजें।

नोट : आप स्वयं भी रोहिणी, पीतमपुरा, शालीमार बाग एवं आस-पास के क्षेत्रों में धर्मशाला/होटला ओयो रुम विभिन्न बैवसाइटों के माध्यम से बुक करा सकते हैं आप द्वारा स्वयं बुक कराने से सम्भव है कुछ कम राशि में बुकिंग हो सके।

- ***संयोजक, आवास समिति***

रेल यात्रा से पधारने वाले आर्यजनों के लिए ट्रांस्पोर्ट (यातयात) व्यवस्था : कृपया ध्यान दें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि महासम्मेलन आयोजन समिति की ओर से **ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था** केवल **24 अक्तूबर की प्रात: से 25 अक्तूबर देर रात्रि तक** केवल और केवल दिल्ली के **प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, हजरत निजामुद्दीन, आनन्द विहार, सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशनों** से ही यात्रियों को महासम्मेलन स्थल - **"स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै. 10, रोहिणी दिल्ली-85"** तक पहुंचाने के लिए उपलब्ध होगी। आप कहां से, कब, कितने बजे किस स्टेशन पर पहुंच रहे हैं इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमल करें।

अपने ईमेल/पत्र पर **"आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था हेतु"** अवश्य लिखें ताकि आपके लिए आवास एवं ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था की जा सके। **वापसी में** भी इसी प्रकार **केवल 28 अक्तूबर की प्रात: से देर रात्रि तक** सम्मेलन स्थल से रेलवे स्टेशनों तक ही ट्रांस्पोर्ट व्यवस्था उपलब्ध होगी। आर्यजन इस सेवा का लाभ उठावें।

कृपया नोट करें - दिल्ली के बस अड्डों से यात्रियों के लाने-ले जाने की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। बसों से आने वाले आर्यजन दिल्ली मैट्रो सुविधा का प्रयोग करें।

टांस्पोर्ट हेतु इन साधनों का भी प्रयोग कर सकते हैं

दिल्ली मैट्रो : सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों - नई दिल्ली/पुरानी दिल्ली/आनन्द विहार/सराय रोहिल्ला एवं अन्तर्राज्यीय बसअड्डे कश्मीरी गेट, आनन्द विहार पर मैट्रो सुविधा उपलब्ध है। आप अपने निकटतम मैट्रो स्टेशन से रोहिणी वैस्ट का टोकन लेकर सम्मेलन स्थल पहुंचें। निजामुददीन रेलवे स्टेशन या सराय कालेखां बस अड्डे पहुंचने वाले आर्यजन वहां से प्रगति मैदान मैट्रो स्टेशन पहुंचकर सम्मेलन स्थल पहुंच सकते हैं। (मैट्रो में अधिकतम किराया 60/- है)

ओला/उबर कैब : अपने स्मार्ट फोन में OLA App या UBER App डाउनलोड करें। अपनी लोकेशन सैट करें और कार बुक करके सम्मेलन स्थल पहुंचें अधिकतम 4 लोगों के लिए बिल अनुसार किराया उचित।

ओटो : रेलवे स्टेशन/बस अड्डे से कोई भी ओटो लेकर सम्मेलन स्थल पहुंचे।

प्रीपेड टैक्सी : किसी भी रेलवे स्टेशन/बस अड्डे से प्री-पेड टैक्सी/ओटो लेकर भी उचित किराये के साथ सम्मेलन स्थल पहुंचा जा सकता है। (अधिकतम चार लोग)

- ***संयोजक, यातायात समिति***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 17 सितम्बर, 2018 से रविवार 23 सितम्बर, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20-21 सितम्बर, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 सितम्बर, 2018

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द नगर का निर्माण ...

श्री सुखदेव जी एवं अनेक अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। इस शोभायात्रा में हर आयु वर्ग के आर्यजन, बच्चे, युवा और वृद्धजनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। शोभायात्रा में सबसे आगे एक टैम्पो पूरी शोभायात्रा को दिशा-निर्देशन दे रहा था, जिसमें श्री विनय आर्य जी के साथ भजन गाते हुए, जयघोष लगाते हुए उत्साही आर्यजन एवं बच्चे मौजूद थे। इसके बाद स्कूटर, स्कूटी, मोटर साइकिल, ई-रिक्शा आदि वाहनों पर आर्यजनों के गले में पीतवस्त्र, सिर पर टोपी हाथ में ओम ध्वज लिए हजारों की संख्या में आर्य नर-नारी चल रहे थे। इसके बाद चार पहिया वाहनों का काफिला जिसमें कार, टैम्पो, बस आदि में भारी संख्या में आर्यजन महर्षि दयानन्द की जय-जयकार कर रहे थे। बीच-बीच में आर्यवीर दल के युवक खुली गाड़ियों में आर्यसमाज अमर रहे का नारा लगा रहे थे।

चारों तरफ उंमग, उत्साह, उल्लास और खुशियों का वातावरण था। और क्यों न हो - जब आर्यों का महाकुम्भ आर्य महासम्मेलन होने वाला है। तो ऐसे ही अद्भुत नजारे की उम्मीद की जानी चाहिए। इस शोभायात्रा का रोहिणी क्षेत्र की सभी आर्यसमाजों द्वारा बीच-बीच में जलपान कराकर स्वागत किया गया। यह शोभायात्रा सभी दिल्लीवासियों को आर्यसमाज का परिचय देते हुए ऋषि दयानन्द सहित आर्यसमाज के सभी महापुरुषों का जय-जयकार करते हुए अपने निश्चित समय पर स्वर्ण जयन्ती पार्क में एक समूह के रूप में परिवर्तित हो गई।

इस अवसर पर महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी ने अपने कर-कमलों से स्वर्णजयन्ती पार्क के प्रांगण में वृक्षारोपण किया। दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने घोषणा की कि सम्मेलन तक इस पार्क में 2 हजार पौधे लगाए जाएंगे। इसी क्रम में महाशय धर्मपाल जी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने हजारों की संख्या में उपस्थित आर्य नर-नारियों, बच्चों के साथ यज्ञशाला का पिलर स्थापित किया। इस अवसर पर दयानन्द नगर निर्माण यज्ञ विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। इस यज्ञ में आर्यसमाज के पुरोहित, धर्माचार्यगण, वैदिक विद्वान डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती, आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी, साध्वी उत्तमायति सहित अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों, उ. पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री सुरेन्द आर्य, महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी, महामन्त्री श्री चतर सिंह नागर, पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री बलदेव सचदेवा, महामन्त्री श्री वीरेन्द्र सरदना, पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री अशोक कुमार गुप्ता, महामन्त्री श्री सुनहरी लाल यादव, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री शिव कुमार मदान, मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा, सुखबीर सिंह आर्य, सुरेश चन्द्र गुप्ता, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा के साथ-साथ हजारों की संख्या में कर्मठ कार्यकर्ता एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

महाशय धर्मपाल जी एवं महापौर श्री आदेश कुमार गुप्ता जी ने अपने पवित्र हाथों से यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। श्री विनय आर्य जी ने सभी आए हुए आर्यजनों का स्वागत करते हुए इस विशाल शोभायात्रा की सफलता के लिए बधाई दी।

इस अवसर पर श्री आदेश गुप्ता महापौर ने सम्मेलन हेतु तैयार किए गए मैदान के नक्शे का अनावरण करते हुए कहा कि मैं स्वयं को धन्य मान रहा हूं कि मेरे कार्यकाल में आर्यसमाज का ऐसा ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन मेरे ही क्षेत्र रोहिणी में आयोजित हो रहा है। मैं हर तरह से इस महासम्मेलन में आने वाले अतिथियों का स्वागत सम्मान करूंगा और तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग दूंगा।

महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि देश-विदेश से आने वाले सभी आर्यजनों का स्वागत अपने दामाद की तरह किया जाएगा। श्री विनय आर्य जी ने कहा कि पर्यावरण शुद्धि के लिए इस सम्मेलन में जितना भी कूड़ा-कचरा एकत्रित होगा, उसको कम्पोस्ट खाद बनाया जाएगा और महासम्मेलन स्थल पर पौधों में उपयोग किया जाएगा।

इस अवसर पर आर्यसमाज रानीबाग के प्रधान श्री जोगेन्द्र खट्टर, व. उप प्रधान श्री रामलाल आहूजा एवं श्रीमती अंजना चावला ने सम्मेलन के सहयोग हेतु 7 लाख रुपये की राशि महाशय धर्मपाल जी को भेंट की।

स्वामी प्रणवानन्द जी ने सभी को आशीर्वाद दिया और सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। सभी उपस्थित आर्यजनों ने ऋषि लंगर का आनन्द लिया और सम्मेलन को सफल बनाने के संकल्प के साथ सबने विदाई ली।

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह